ई-संस्करण, अंक 31

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

गपशप

प्यारे साथियों,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं कि सभी बच्चों के स्कूल अभी भी बंद हैं और सब अपने–अपने घर पर ही हैं। हमने सोचा कि हमारे साथियों को अपने गपशप का इन्तज़ार होगा, तो हम आपके लिए लेकर आए हैं गपशप का नया अंक। जिसमें हम सब जानेंगे कोरोना के समय में अपने समय का सदुपयोग कैसे करें और इंटरनेट पर ऑनलाइन पढ़ाई करते वक्त किन बातों का ध्यान रखें। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

विश्व की साहसी महिलाएँ

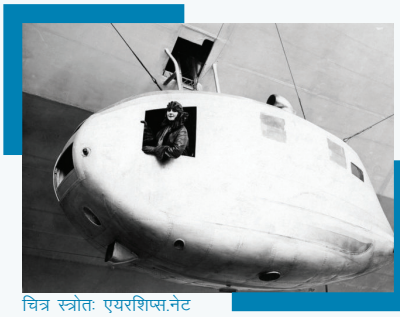
चित्र स्त्रोतः एयरशिप्स.नेट

लेडी ग्रेस ड्रममंड हे (1895–1946)

19 अगस्त 1929 को, लेडी ग्रेस ड्रमंड हे 'जेपेलिन यान' पर सवार हुई जो दुनिया में ख़बरों को प्रसारित करने वाला पहला हवाई जहाज़ था। जब 21 दिन बाद हवाई जहाज उतरा, यह दुनिया की यात्रा करने वाली पहली महिला बन गई थी। वह 60 पुरुष यात्रियों और चालक दल के बीच एकमात्र महिला थीं। उस उड़ान की उनकी रिपोर्ट प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई थी जिसने एक लेखक और विमानन विशेषज्ञ के रूप में उनके कैरियर को मजबूत करने में मदद की। रोमांच वहाँ नहीं रुका। ड्रमंड हे ने अगले 10 साल दुनिया की यात्रा करने और अपने अनुभवों के बारे में लिखने में बिताए। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान उन्हें फिलीपींस के एक जापानी शिविर में नजरबंद कर दिया गया था जहाँ वह बीमार हो गई थीं। उनकी रिहाई के कुछ समय बाद ही उनकी मृत्यु हो गई।

एनी स्मिथ पेक (1850–1935)

अमेरिकी पर्वतारोही और विद्वान, पुरातत्व के क्षेत्र में कॉलेज प्रोफेसर बनने वाली अमेरिका की पहली महिलाओं में से एक हैं। पेक ने रोमांचक यात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए अपने कारनामों के बारे में किताबें लिखी हैं। पहाड़ पर चढ़ने के रिकॉर्ड बनाने के लिए उन्होंने बहुत प्रशंसा हासिल की। उन्होंने स्कर्ट के बजाय पतलून और अंगरखे पहन कर चढ़ाई पूरी की। उन्होंने पेरू में माउंट कोरोपुना के ऊपर महिलाओं के लिए एक ध्वज लगाकर 'सुफ्रागिस्ट' आंदोलन के लिए अपना समर्थन दिखाया। पेरू में एक चोटी को इनके सम्मान में क्यूमरे ऐनी पेक (1928 में) का नाम दिया गया। स्मिथ ने 82 वर्ष की आयु में अपने अंतिम पर्वत, न्यू हैम्पशायर में 5,367 फीट माउंट मैडिसन पर चढ़ाई की।

चित्र स्त्रोतः कॉमन्स.विकिमीडिया.ओर्ग

चित्र स्त्रोतः इनअथ.कॉम

अरूणा आसफ अली (1909–1996)

भारत छोड़ो आंदोलन की नायिका, अरुणा आसफ अली का जन्म 16 जुलाई, 1909 को एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने बंबई के ग्वालिया टैंक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहराकर भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत की थी। नमक सत्याग्रह के दौरान होने वाली सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने के कारण अंग्रेज़ी सरकार ने इनकी गिरफ्तारी का निर्देश जारी किया और उनकी सूचना देने पर 5,000 का इनाम रखा। फिर भी वह राम मनोहर लोहिया के साथ मिलकर 'इंकलाब' नामक मासिक समाचार पत्र का संपादन करती रहीं। वर्ष 1975 में अरुणा को शांति और सौहार्द के लिए लेनिन प्राइज और 1992 में पद्म विभूषण और 1997 में सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत–रत्न से सम्मानित किया गया। 29 जुलाई, 1996 को अरुणा आसफ अली का निधन हो गया।

सावित्रीबाई फुले (1831–1897)

भारत की पहली महिला शिक्षक, समाज सेविका सावित्रीबाई का जन्म 1831 को महाराष्ट्र के पुणे में हुआ था। सावित्रीबाई फुले स्कूल जाती थीं, तो लोग पत्थर मारते थे। उन पर गंदगी फेंक देते थे। उन्होंने उस दौर में लड़कियों के लिए स्कूल खोला जब बालिकाओं को पढ़ाना–लिखाना सही नहीं माना जाता था। उन्होंने 1848 में महाराष्ट्र के पुणे में देश के पहले बालिका स्कूल की स्थापना की। उन्होंने लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले और गर्भवती बलात्कार पीड़ितों के लिए भी एक भवन की स्थापना की। उनका पूरा जीवन समाज के वंचित तबके ख़ासकर महिलाओं और दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष में बीता। छुआ–छूत, सती प्रथा, बाल–विवाह और विधवा विवाह निषेध जैसी कुरीतियां के विरुद्ध काम किया। इनकी मृत्यु 10 मार्च, 1897 को प्लेग के मरीज़ों की देखभाल करने के दौरान हुई।

चित्र स्त्रोतः इंडियाटुडे.इन